ध्यान-कक्ष

समभाव-समदृष्टि का स्कूल

धर्म के निमित्त समर्पण

सतयुग की पहचान है यह, मानवता का स्वाभिमान है यह

SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

मार्गदर्शक बल
(Guiding force)

सतवस्तु का कुदरती ग्रंथ

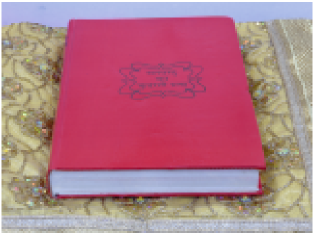

पढ़ो, समझो व अमल में लाकर
श्रेष्ठ मानव बन जाओ।

इसे पढ़ने के लिए इस QR Code को स्कैन करें।

प्रकाशक
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
"वसुन्धरा" ग्राम भूपानी–लालपुर रोड फरीदाबाद–121002 (हरियाणा)
ई–मेलः info@satyugdarshantrust.org | website: www.satyugdarshantrust.org

© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)

| ISBN : 978-93-85423-84-0

प्रथम संस्करण | अप्रैल, 2025

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं, ज्ञान को अपनाओ और

निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह,

इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो

ओ३म् अमर है आत्मा,

आत्मा में है परमात्मा

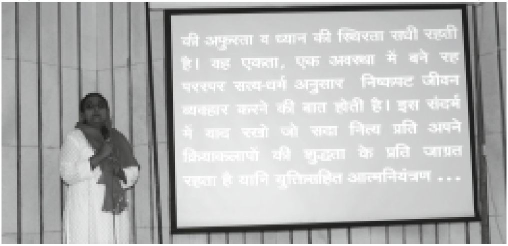
की अफुल्लता व ध्यान की स्थिरता सधी रहती
है। यह एकता, एक अवस्था में बने रह
परस्पर सत्य-धर्म अनुसार निष्कपट जीवन
व्यवहार करने की बात होती है। इस संदर्भ
में याद रखो जो सदा नित्य प्रति अपने
क्रियाकलापों की शुद्धता के प्रति जाग्रत
रखना है यानि युक्तिसहित आत्मनियंत्रण . . .

सच्चाई
धर्म
सम

धर्म के निमित्त समर्पण

धर्म के निमित्त समर्पण

सजनों आत्मकेन्द्र में स्थिर रहते हुए आत्मज्ञान प्राप्त करना व सच्चिदानंद स्वरूप हो जाना मानव का सबसे पहला और मुख्य कर्त्तव्य अथवा धर्म है। इसी संदर्भ में जो भी साधक इस धर्म पालना के निमित्त अपनी 'हौं-मैं' को त्याग कर, श्रद्धापूर्वक सत्यता से समर्पित हो जाता है, उस धर्मनिष्ठ के ही चित्त को, धर्म रूपी मेघ - 'नाम' **(आत्मबोध कराने वाला शब्द)** सिमरन के प्रभाव से उत्पन्न होने वाली आत्मदर्शन रूपी वर्षा द्वारा, अत्यन्त धीरता से विचारपूर्वक सींचते हैं। युक्तिसंगत किए जाने वाले इस सिंचन से, जन्म-जन्मांतर के प्रभाव से हृदय में उत्पन्न वासनाओं यानि मानसिक सुख-दुःख की भावनाओं, संस्कारों, कुछ पाने या करने की अनुचित कामनाओं, मिथ्या विचारों या ख्यालों व स्मृति आदि का नाश यानि सफाया हो जाता है और चित्त भूमि पुनः शुद्ध व उर्वरक हो बीजारोपण के लिए तैयार हो जाती है। जैसा कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा भी गया है:-

नाम दियां बून्दा बरसन,
किणमिण किणमिण बरसन
हुन खाक होवे साडी साफ़,
हुन बीज बोवो दिन रात,
सुखकारी लिया ए संवार
हुन सच्चे शौह नाल प्यार,
धर्म दा झण्डा झूले

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान द्वितीय, कीर्तन न० 36)

इस उपजाऊ भूमि में फिर जब साधक वैराग भाव से ओत-प्रोत हो, परम पुरुषार्थ द्वारा दिन-रात, ब्रह्मबीज का रोपण करता है तो जिस प्रकार एक नन्हें से बीज से पूरा वटवृक्ष उत्पन्न हो जाता है, उसी प्रकार इस ब्रह्मबीज यानि एकाक्षर शब्द ब्रह्म की निरंतर रटन से, हृदय गुहा में व्याप्त, निराकार तेजोमय आत्मतत्व प्रकाशित हो उठता है। तदुपरांत ख़्याल को एकाग्र कर, ध्यान दृष्टि द्वारा गहनता से इस आत्मप्रकाश में देखने पर, सत्यस्वरूप परमात्मा का साक्षात्कार हो जाता है और स्वयं के ज्ञानमय, गुणमय व शक्तिवान होने

का आभास होता है। इस आभास से अज्ञानमय तम् का समूलतः नाश हो जाता है और मन संतुष्ट व शांत, चित्त सुदृढ़ व धीर, वृत्ति, स्मृति, बुद्धि व स्वभाव निर्मल हो जाता है। ऐसा होने पर संकल्प का झुखना मिट जाता है, अंतःकरण विशुद्ध हो जाता है, आचार-विचार व व्यवहार सत्य के परिवेश में ढल जाते हैं और समुचित शारीरिक, मानसिक व आत्मिक विकास होने लगता है। इस महत्ता के दृष्टिगत ही सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया हैः-

निर्मल वृत्ति, निर्मल स्मृति,
जैं सूक्ष्म युक्ति वल ध्यान दिया
निर्मल पा लिया बाणा उसने अपना आप
पहचान किया, ओ अपना आप पहचान किया

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान पंचम,
कीर्तन न० 53)

सारतः कहें तो धर्म-आश्रय व नाम-अक्षर की ताकत से, सूखा व मुरझाया हुआ शरीर रूपी दरख़्त भी, पुनः हरा-भरा व ख़ुशहाल हो जाता है और उस पर

सुकर्मों की टहनियाँ, सम, संतोष व धैर्य के पत्ते, सच्चाई के सुगंधित पत्र-पुष्प तथा मोक्ष रूपी ऐसे मीठे फल लगते हैं जिनकी स्वाभाविक सुगन्धि, देवलोक की सुगंधि को भी मात कर देती है। इस तरह जीव माया के बंधन से मुक्त हो, प्रकाश नाल प्रकाश हो एकरूप हो जाता है। जैसा कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा भी गया हैः-

खालस सोना दरख़त होया,
वे खालस सोना दरख़त होया
त्रिलोकी विच चानणा दिखावे वे,
जेहड़ा इस दरख़त दे नीचे आवे,
चानणे नाल चानणा हो जावे
जेहड़ा इस दरख़त दे नीचे आवे,
वे जेहड़ा इस दरख़त दे नीचे आवे
चानणे नाल चानणा हो जावे
रघुवर हो गए दीन दयाल,
दरख़त तेरे भाग जागे ने

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान द्वितीय, कीर्तन न० 50)

इस तथ्य से सजनों आप भी जीवन में आत्मज्ञान प्राप्त कर, धर्मज्ञ बनने की महत्ता को समझो और इस हेतु सत्-नाम रूपी शब्द का युक्तिसंगत नियम से तीन वक्त पाठ करो व सारा दिन मूलमंत्र आद् अक्षर ओ३म् का श्वास-प्रश्वास अफुरता से जाप करो। इस तरह इस शरीर रूपी दरख़्त को खालस सोना यानि निर्विकारी बना, आत्मबोध करने वाले धर्मनिष्ठ इंसान बनो। जानो एक धर्मनिष्ठ इंसान ही संकल्प पर पूरी तरह से फतह पा, आत्मा को अपने परमात्म स्वरूप में स्थित रखने में सक्षम हो सकता है यानि 'ईश्वर है अपना आप प्रकाश, ईश्वर है अजपा जाप' के विचार पर सुदृढ़ बना रह, सारे जगत में धर्म का परचम लहरा सकता है। इस महत्ता के दृष्टिगत आप भी धर्म और अधर्म का विवेक रखने वाले यानि अच्छे-बुरे का विचार करने वाले धर्म विजयी इंसान बनो और अखंड यश कीर्ति प्राप्त करो। जानो समय को दृष्टिगत रखते हुए ऐसा साहस दिखाना अब परम आवश्यक है क्योंकि शास्त्र कह रहा हैः-

कलुकाल दे इन्सान जे हार खा बैठे,
तां सतवस्तु दा नज़ारा देखे कौन
सतवस्तु में चौरासी दग्ध भस्म हो राहसी
तां चतुर्भुजधारी दा नज़ारा देखे कौन
हिम्मत लड़ाओ मेरे सजनों,
जे सतवस्तु विच आना जे
तां हिम्मत लड़ाओ मेरे सजनों,
जे संग लक्ष्मी चतुर्भुजधारी दा दर्शन पाना जे।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान पंचम,
कीर्तन न० 68)

विभिन्न युगों में धर्म स्थिति

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार जानो, सृष्टि रचना के आदिकाल अर्थात् सतयुग में संकल्प नहीं होता इसलिए उस युग में धर्म चार पादों (भागों) में स्थित होता है यानि सब धर्ममय अर्थात् धर्म से परिपूर्ण होते हैं। यही कारण है कि उस युग को सवश्रेष्ठ धर्मयुग व उसमें रहने वाले धर्म-प्रवृत्त इंसानों को धर्मवीर कहा जाता है। परन्तु फिर जैसे ही स्वभावों में तबदीली होने के कारण संकल्प पैदा

हो जाता है और उसके साथ-साथ झुखना शुरू और रोना उग पड़ता है तो आ जाता है त्रेता युग। त्रेता युग में धर्म तीन पादों पर आ जाता है यानि तीन-चौथाई जनता ही धर्म मार्ग का अनुसरण करने में स्वयं को सक्षम पाती है और शेष धर्मविमुख हो जाती है।

इसी तरह जब युगांत में स्वभावों में और तबदीली आ जाती है और उसके कारण संकल्प व उसका झुखना-रोना और बढ़ जाता है तो आ जाता है द्वापर युग। द्वापर युग में धर्म दो पादों पर आ जाता है यानि आधी जनता ही धर्म मार्ग का अनुसरण कर पाती है और बाकी धर्मच्युत हो जाती है। अंत में जब संकल्प बिल्कुल बढ़ जाता है और झुखना ही झुखना व रोना ही रोना हद से ज्यादा हो जाता है तो कालक्रम अनुसार कलियुग आ जाता है। कलियुग में धर्म मार्ग पर चलने वालों का पराक्रम बिलकुल कमज़ोर पड़ जाता है इसलिए धर्म एक पाद पर स्थित हो जाता है यानि मुश्किल से एक चौथाई जनता ही धर्म का अनुशीलन कर पाती है।

यहाँ समझने की बात यह भी है कि युग-युगांतरों में जिस अनुपात से धर्म के रास्ते पर चलने वालों का पराक्रम कमज़ोर पड़ता है, उसी अनुपात से वैश्विक स्तर पर धर्म व्यवस्था, नैतिक व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था व आर्थिक व्यवस्था भी कमज़ोर हो डावाँडोल होती जाती है। इसका प्रमाण आज की पतित व तनावयुक्त शारीरिक, मानसिक व सामाजिक विकृत परिस्थितियों के रूप में समक्ष देखा ही जा सकता है। इस संदर्भ में शास्त्र भी इस स्थिति से हमारा परिचय कराता हुआ कह रहा हैः-

धर्म छोड़े इन्सान ओ सारे,
धर्म छोड़े ओ सृष्टि सारी।
विपत्ति खरीद लई ओन्हां ने हो गये
आपस विच शिकारी।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान चतुर्थ,
कीर्तन न० 30)

अर्थात् वर्तमान असत्य व अधर्म के युग में आज सृष्टि के सारे इन्सान अपना यथार्थ धर्म छोड़,

संसारी कलुषित भाव-स्वभाव अपना चुके हैं और मानवता के विपरीत चलन अपना कर यानि भ्रष्टाचार, दुराचार, व्यभिचार व अत्याचार करते हुए, अपने व सबके मन की सुख-शांति हर चुके हैं। इस तरह अधिकांश सृष्टि धर्मविमुख हो तीनों तापों से त्रस्त हो गई है और हर मानव व्यक्तिगत स्वार्थ को साधने के लिए, हिंसक वृत्ति हो, परस्पर शिकारियों जैसा व्यवहार कर रहा है। परिणामस्वरूप अपने लिए आप विपत्ति खरीद कर, वे आज अति दुःखद अवस्था को प्राप्त हो, संकट भरा जीवन जी रहे हैं। आप के साथ ऐसा न हो इस हेतु शास्त्र कहता है कि समय रहते ही आत्मज्ञान प्राप्त कर धर्म, जो कि आपकी मूल सात्विक वृत्ति है उसे धारण करो और आत्मनिग्रही बनकर, अपने मन व प्राणों को पूर्ण विश्वास के साथ एक कर, आत्मस्वरूप में अवस्थित हो जाओ व मानवता के कल्याण के निमित्त परोपकार करने में जुट जाओ। इस विषय में फिर से सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ आने वाले संकट की चेतावनी देते हुए कहता है:-

पाप हटाना है, धर्म बचाना है।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान तृतीय, कीर्तन न० 57)

अर्थात् कालक्रम अनुसार अब कलियुग के व्यतीत होने का व सतवस्तु के आगमन का समय नज़दीक आ गया है। इसलिए परमेश्वर कहते हैं कि इस धरती से अब पाप यानि असत्य व अधर्म का नाश कर, धर्म यानि सत्कर्म करने वाले सत्वगुणी सदाचारी इंसानों की रक्षा करनी है ताकि कुल सृष्टि सत्य का वर्त-वर्ताव करते हुए अपने मूल प्राकृतिक धर्म/स्वभाव पर स्थिर बनी रह सके और भक्ति भाव से अपने मन को सत्य-धर्म के मंत्रकार परमेश्वर में लीन रखते हुए प्रसन्नचित्तता से उसके हुकम अनुसार विचारयुक्त चलन अपना सके। जानो ऐसा होने पर ही सम्पूर्ण मानव जाति माला के मनकों की तरह एक सूत्र में बँध, एक भाव, एकता, एक अवस्था में बनी रह सकेगी और इस धरा पर पुनः सजन युग यानि सतवस्तु जैसा शांतमय समय आ जाएगा जिसके सम्बन्ध में पहले से ही सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में उद्‌घोष करते हुए बता दिया गया है:-

कलुकाल जब हटने लगा तो वह दिन आने वाला
साजन जी वह दिन आने वाला
हो हो हो वह दिन आने वाला
साजन जी वह दिन आने वाला

सच्चाई धर्म दे दो मन्त्र रटनगे,
फिरसिया इको माला साजन जी,
फिरसिया इको माला
हो हो हो कलुकाल जब हटने लगा तो वह
दिन आने वाला साजन जी वह दिन आने वाला

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान चतुर्थ,
कीर्तन न० 36)

निष्कर्ष

अंत में सजनों हम तो यही कहेंगे कि विवेक-पूर्वक कार्य करते हुए उचित को ग्रहण करो और अनुचित का त्याग करो, यही धर्म को विकसित करने का उत्कृष्ट साधन है। इस साधन के प्रयोग द्वारा खुद मानव-धर्म पर स्थिरता से बने रह, नैतिक तौर पर पतित प्रत्येक मानव को, पुनः अपने हृदय में मानवता का विकास करने के प्रति उत्साहित करो।

जानो यह जगत कल्याण हेतु सबसे उत्तम समाज सेवा है जो अपने-अपने समयकाल में युग पुरुषों ने, ख़ुद मानव धर्म पर स्थिरता से बने रह, बख़ूबी कर दिखलाई। आप भी इस निष्काम सेवा के दौरान अति संतोष के साथ, धीरता से कार्य करते हुए रास्ते में आने वाले मान-अपमान, दुःख-सुख आदि से मत घबराओ अपितु सर्व-सर्वत्र धर्म का झंडा बुलंद करने हेतु तन-मन-धन वारने से भी यानि कि अपनी जान कुर्बान करने से भी मत सकुचाओ। जानो जो कर्त्तव्यपरायण सुपुत्र ऐसा पराक्रम दिखाएगा वही अखंड शांति प्राप्त कर अपना नाम रौशन कर पाएगा। जैसा कि कहा भी गया है:-

देखो गुरु गोबिन्द सिंह जी दे लाडले,
धर्म ते जानां वारियां
ओ रौशन नाम करन,
ओ रौशन नाम करन।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान षष्ठम,
कीर्तन न० 14)

Learn the science of inner dimensions
at **Dhyan-Kaksh**
School of Equanimity & Even-sightedness

विषय

ध्यान-कक्ष

- ध्यान-कक्ष यानि समभाव-समदृष्टि का स्कूल (परिचय)

आत्मज्ञान

- आत्मज्ञान
- आत्मज्ञानी की पहचान
- आत्मिक ज्ञान के लिए पहली आवश्यकता
- आत्मिक ज्ञान एवं भौतिक ज्ञान में अंतर
- आत्मिक ज्ञान प्राप्ति से लाभ

शरीर/प्राण/भाव/दृष्टि को सम रखना

- शीश अर्पण व शारीरिक समता साधने का महत्त्व
- प्राण को सम रखने की कला
- भाव
- समभाव
- समभाव साधना
- समदृष्टि
- समबुद्धि एंव समभाव-समदृष्टि का व्यावहारिक रूप

अपनी पहचान

- निज मानव स्वरूप की पहचान
- यथार्थ ब्रह्म स्वरूप की पहचान
- ब्रह्म
- शब्द ब्रह्म
- ओ३म शब्द की महानता व महत्ता

समभाव-समदृष्टि का कायदा

- जिह्वा स्वतन्त्र अर्थात् आहार एवं वाणी संयम
- संकल्प स्वच्छ
- दृष्टि कंचन

आत्मविजय

- आत्मनिरीक्षण
- आत्मसंयम/आत्मनियन्त्रण (भाग-1 और-2)
- आत्मानुशासन एवं आत्मविजय

विचार एवं विवेक

- विचार
- विवेक
- विवेक जाग्रति
- विवेकशील मानव की पहचान

Offline classes and activities
Every Sunday from 12.45 pm to 1.45 pm
at Dhyan-Kaksh, Satyug Darshan Vasundhara,
Bhopani-Lalpur Road, Greater Faridabad - 121002

Online classes can be viewed at

Learn the science of inner dimensions

at **Dhyan-Kaksh**

School of Equanimity & Even-sightedness

विषय

मानवता के गुण

- संतोष-परिभाषा
- संतोष विकसित करने का साधन
- धैर्य-परिभाषा
- धैर्य का व्यावहारिक रूप
- धीर व्यक्ति की पहचान व धैर्य धारणा से लाभ
- सत्य-परिभाषा
- सत्य को विकसित करने का साधन
- सत्-संगति की महत्ता
- सत्यभाषी बनने की महत्ता
- धर्म-परिभाषा
- धर्म का विषय एवं उद्देश्य
- धर्म के निमित्त समर्पण
- निष्कामता-अर्थ
- निष्काम रास्ते की बाधा एवं उससे उबरने की युक्ति
- परोपकार

चित्त-वृत्तियों के निरोध का साधन

- अभ्यास-अर्थ
- अभ्यास सफलता का मूल
- वैराग्य
- वैराग्य-कसौटी
- मौन-अभिप्राय
- मौन और वाणी
- मौन का जीवन महत्त्व

Offline classes and activities
Every Sunday from 12.45 pm to 1.45 pm
at Dhyan-Kaksh, Satyug Darshan Vasundhara,
Bhopani-Lalpur Road, Greater Faridabad - 121002

Online classes can be viewed at

आप इस विषय का वीडियो निम्नलिखित लिंक (QR code) पर स्कैन करके देख सकते हैं

View this class by scanning this QR code link

Initiatives of Satyug Darshan Trust (Regd.) on Humanity and Ethics

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD
www.humanityolympiad.org

HUMANITY DEVELOPMENT CLUB
www.awakehumanity.org

INTERNATIONAL OPEN ORATORY CONTEST
www.dhyankaksh.org

INTERNATIONAL OPEN POETRY RECITATION CONTEST
www.dhyankaksh.org

For FREE workshops in your School, College and groups

Scan for Dhyan-Kaksh Social Media

Contact

Mobile : +91 8595070695
Email: contact@dhyankaksh.org
Website: www.dhyankaksh.org

Scan for Dhyan Kaksh Location

https://bit.ly/3v4O8B2

Disclaimer: The contents of this book are intended to foster universal human values, consciousness, fraternity, and love for humanity without endorsing or promoting any specific religious belief